कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 36–38

इमली में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्राकृतिक प्रबंधन

रवि कुमार रजक[1], एवं रागनी देवी[1] डॉ. पंकज कुमार[2] एवं ओम नारायण[3]
[1]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[2]सहा. प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग
[3]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ.प्र.), भारत।
Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय–

इमली एक फैबेसी कुल का पौधा है। इस पौधे के कच्चे फल हरे कुछ भूरे रंग के होते है और इसके पके हुए फल लाल रंग के हो जाते है। जो कि स्वाद में बहुत खट्टे होते है एवं इसकी पत्तियां भी स्वाद में कुछ खट्टी होती है। इमली का पौधा कुछ समय बाद काफी लम्बा हो जाता है। इमली को खाने से शरीर में रक्तसंचार बहुत अच्छा रहता है। और इसके बीज काले रंग के होते है एवं यह इमली सब्जियों के स्वाद को खट्टा करने में काम आता है। इमली में कुछ कीट नुकंसान पहुचाते है जो निम्नलिखित है।

इमली में लगने वाले प्रमुख कीट

मांहू कीटः

कीट की पहचानः इस माहूं कीट के अन्य नाम मांउ, लाही, तेला, चेपा, मावा और मोयला आदि है। और इस कीट का गण हेमीप्टेरा एवं उप–गण होमोप्टेरा तथा कुल एफिडिडे है। और यह कीट भारत के लगभग सभी राज्यों में पाया जाता है।

क्षति एवं लक्षण– उत्तर प्रदेश में एक सर्वेक्षण के दौरान यह देखा गया है कि यह कीट नवम्बर के अन्तिम सप्ताह या फिर दिसम्बर के प्रथम सप्ताह से दिखाई देने लगता है। क्योंकि उस समय यही कीट सरसों पर बहुत नुकसान पहुंचाता है और फरवरी माह में इस कीट की संख्या बढ़ जाती है एवं इस कीट के शिशु और प्रौढ़ दोनो ही बहुत ज्यादा नुकसान पहॅचाते है एवं इस कीट की दोनों ही अवस्थाओं में चुभाने और चूसने वाले मुखांग पाये जाते है और पौधों पर स्थाई रूप से समुह बनाकर चिपके रहते है और इस कीट का सबसे अधिक प्रकोप तने के मुलायम भागों तथा मुलायम पत्तियों पर होता है। और इस कीट के प्रकोप से इमली के पौधों में फल बहुत कम मात्रा में लगते है। एवं पौधे पीले पड़कर सूखने लगते है, तो इसके बाद इन पेड़ों में शाखायें कम मात्रा में लगती है। एवं यह कीट अपने शरीर से मधु–स्त्राव भी निकालते है। जिसमें काले कवक का आक्रमण भी हो जाता है और फिर पत्तियों में जगह–जगह पर काले धब्बे दिखाई देने लगते है। और यह कीट जो मधु–स्त्राव अपने शरीर से बाहर निकालते है, वह स्वाद में मीठा होता है, तो इसे खाने के लिए चीटियॉ और मधुमक्खियॉ आकर्षित होती है। जिसकी वजह से माहॅू को खाने वाले अन्य कीट इसके पास नही आ पाते है। तो इस प्रकार से माहॅू को सुरक्षा मिलती है। और फिर इसकी संख्या काफी ज्यादा बढ़ती है, तो चीटियों तथा माहॅू

के इस प्रकार से आपस में साथ–साथ रहने को सहजीवन कहते है। और इन कीट के उदर पर दो मधु–नालिकाएं होती है। जिन्हे कोर्निकल्स कहते है। लेकिन साधारण दशाओं में देखा जाये तो यदि दिसंबर – जनवरी के महीने में बादल छाए रहे या फिर हल्की–हल्की फुहार पड़े तथा नमी युक्त हवाएं चले तो इस कीट का प्रकोप अधिक बढ़ जाता है क्योंकि ऐसा मौसम इसकी संतति की वृद्धि के लिए बहुत अच्छा उपयोगी है।

थ्रिप्स कीटः

कीट की पहचान– यह थ्रिप्स (*सिर्टोथ्रिप्स डोर्सेलिस*) कीट एक बहुभक्षी कीट है। जो कि गण थाइसेनोप्टेरा और परिवार थ्रीपिडे के अंर्तगत आता है। और थ्रिप्स का वयस्क कीट एक मिली मीटर से कम लम्बा तथा कोमल हल्के पीले रंग का होता है। और इस कीट में झालरदार पंख पाए जाते है। और इसके मुखांग चूसने वाले होते है। और इसके छोटे शिशु पंख रहित होते है। एवं यह कीट पौधों की पत्तियों की दोनो सतह पर सैकड़ों की संख्या में चिपके रहतें हो।

क्षति के लक्षणः इस कीट के शिशु एवं व्यस्क दोनो ही पौधे को नुकसान पहुचातें है। और यह कीट अपने मुखांगों से पत्तियों की बाहरी त्वचा को खुरच– खुरच कर उनका रस चूसता है। और यह कीट जिन स्थानों से अपने मुखांग से रस को चूसता उस जगह पर पत्तियॉ पीले व सफेद रंग की हो जाती है। एवं बाद में भूरे रंग में बदल जातीं है। और इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर पत्तियॉ सिकुड़ कर अंदर की ओर मुड़ जातीं है। और कई प्रकार के धब्बे और धारीयां बन जाती है।

इमली का घुन कीट– यह एक बहुत बुरा घुन कीट हैं इसका पूरा नाम *सितोफिलस लीनियरिस* हर्बस्ट हैं यह कीट गण कोलियोप्टेरा के अंतर्गत आता है। इसकी फेमिली कर्कुलियोनिडे है। यह कीट लगभग 132 से 189 अंडे तक दे देता है। यह कीट इमली में बहुत नुकसान पहुंचाता है।

कीट नियंत्रण के उपायः

- पौधों पर मिटटी का तेल और राख का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- खेत में नीम के तेल का पॉच प्रतिशत कि दर से छिड़काव करें।
- इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबाल कर ठण्डा कर लें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- इस कीट की रोकथाम के लिए 300 ग्राम धतूरा फल और 300 ग्राम अर्क की पत्तियां और 50 ग्राम नीबू का रस मिलाकर के उबाले और ठण्डा होने के बाद तीन लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

- इस कीट की रोकथाम के लिए नीमास्त्र का प्रयोग करें। और इस नीमास्त्र को बनाने के लिए 5 किलोग्राम नीम की पत्तियां लें या फिर 5 किलोग्राम नीम के फल लें, और इनको कुचल लें, और फिर इसमें 5 लीटर देशी गाय का गौमूत्र मिलायें, एवं इसी में 1 किलोग्राम देशी गाय का गोबर मिलायें और फिर इसी में 100 लीटर पानी मिलाकर एक प्लास्टिक के ड्रम में भर दें, और इसे 48 से 72 घण्टे के लिये बोरा से ढककर रख दें और सुबह या शाम के समय लकड़ी की सहायता से घुमाते रहें और 72 घण्टे पूरे होने के बाद कपड़े की सहायता से छान लें। और फिर 500–700 ग्राम प्रति 15 लीटर के हिसाब से किसी भी फसल पर उपयोग करें। जिस फसल में भी रस चूषक कीटों का प्रकोप हो गया है या फिर छोटी इल्लियां हैं इन सभी के लिए यह बहुत ही असर दार होगा।
- इस कीट की रोकथाम के लिए अग्नि अस्त्र का प्रयोग करें। जो इस प्रकार से बनाया जाता है। इसमे 5 किलोग्राम नीम की पत्ते लें, और 20 लीटर देशी गाय का गौमूत्र लें, और फिर तम्बाकू के पत्ते या फिर डंठल या पिसा हुआ तम्बाकू पाउडर 500 ग्राम लें, और 500 ग्राम तीखी मिर्च की चटनी लें, और फिर 500 ग्राम लहसुन की चटनी लें, इन सभी चीजो को धीमी आंच पर एक उबाल आने तक उबालें। और फिर इस मिश्रण को 48 घण्टे तक छाया में रखें और इसके बाद कपड़े से छानकर 6 से 8 लीटर घोल 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल पर छिढ़काव करें। लेकिन इस बने हुए अग्नि अस्त्र को 3 माह के अन्दर ही प्रयोग कर लें।
- इस कीट की रोकथाम के लिए दशपर्णी अर्क का प्रयोग करें। और इसे बनाने के लिए सबसे पहले एक प्लास्टिक का ड्रम लें और उसमें 200 लीटर पानी भर लें, फिर उसमें देशी गाय का गोबर 2 किलोग्राम मिलायें और इसमें 2 किलोग्राम नीम के पत्ते और 2 किलोग्राम अरण्डी के पत्ते और 2 किलोग्राम सीताफल के पत्ते और 2 किलोग्राम बेंल के पत्ते और 2 किलोग्राम गैंदा के पत्ते और 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते और 2 किलोग्राम अमरूद के पत्ते और 2 किलोग्राम मदार (आकड़ा) के पत्ते और 2 किलोग्राम कनेर के पत्ते और 2 किलोग्राम आम के पत्ते लेकर इन सभी पत्तियों को इक्टठा करके कुचलकर मिला लें और जो ड्रम अभी लिया था उसमे डाल दें। फिर इसमें 500 ग्राम हल्दी पाउडर मिलायें और उसी में 500 ग्राम अदरक की चटनी भी मिलायें और उसी में 10 ग्राम हींग पाउडर भी मिलायें और उसी में 1 किलोग्राम तम्बाकू के पत्ते भी मिलाये और उसी में 1 किलोग्राम हरी मिर्च के चटनी भी मिलायें और 1 किलोग्राम देशी लहसुन की चटनी भी मिलायें और इन सभी चीजों को अच्छी तरह से लकड़ी की सहायता से घोलें। और फिर ड्रम को बोरी से ढककर छायादार स्थान पर रख दें और सुबह–शाम इसको लकड़ी की सहायता से हिलाते रहें और जब 30 से 40 दिन हो जायें तो इसें कपड़े की सहायता से छान लें। और इसे प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 6 लीटर दशपर्णी अर्क मिलाकर छिड़काव करें। और इस दशपर्णी अर्क को 6 माह के अन्दर प्रयोग कर लेना चाहियें।